दैनिक जागरण
अच्छी संगति आगे बढ़ने का बल और हिम्मत देती है

मंदी से बचने के उपाय

मंदी की चर्चा और चिंता के बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आम जनता के साथ ही कारोबार जगत को जो भरोसा दिलाया उसका महत्व तभी है जब जमीन पर हालात बदलते हुए दिखेंगे। यह अच्छा हुआ कि वित्त मंत्री ने यह समझा कि मंदी के माहौल को दूर करने के लिए केवल रिजर्व बैंक के भरोसे रहना ठीक नहीं। उन्होंने न केवल घरेलू और विदेशी निवेशकों पर बढ़े सरचार्ज को वापस लेने की घोषणा की, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि अब कारपोरेट सामाजिक दायित्व यानी सीएसआर उल्लंघन के मामलों को आपराधिक नहीं माना जाएगा। ये घोषणाएं यही बताती हैं कि सरकार ने बजट में की गई भूल को सुधारना जरूरी समझा। मोदी सरकार को भविष्य में ऐसी भूलों से बचना चाहिए, क्योंकि उनसे नकारात्मक माहौल का निर्माण होता है और यह किसी से छिपा नहीं कि अर्थव्यवस्था को गतिशील बनाए रखने में सकारात्मक माहौल की एक बड़ी भूमिका होती है। उम्मीद की जानी चाहिए कि वित्त मंत्री ने संकटग्रस्त एमएसएमई को राहत देने के उपायों के साथ यह जो स्पष्ट किया कि अब 30 से 60 दिन के भीतर जीएसटी रिफंड मिलेगा और बकाया कर्ज के मामले जल्द सुलझाए जाएंगे उससे कारोबार जगत उत्साहित होगा। उसे होना भी चाहिए और यह भी समझना चाहिए कि राहत पैकेज समस्या का सही समाधान नहीं।

ऑटो सेक्टर की ओर से राहत-रियायत की मांग के जवाब में सरकारी विभागों द्वारा नए वाहनों की खरीदारी को सुनिश्चित करने और मार्च 2020 तक खरीदी गई बीएस-4 मानक की गाड़ियों को मान्य करने के कदम इस सेक्टर की समस्या का समाधान करने वाले साबित होने चाहिए। एनबीएफसी और बैंकों को लिक्विडिटी की किल्लत से बचाने के उपायों की घोषणा करते हुए वित्त मंत्री ने यह संकेत दिया कि आने वाले दिनों में कुछ और कदम उठाए जा सकते हैं। ये संभावित कदम जल्द उठाए जाएं तो बेहतर, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था की सुस्ती को लेकर जो नकारात्मक माहौल बन रहा है उसे रोकना वित्त मंत्रालय की पहली प्राथमिकता बनना चाहिए। ध्यान रहे कि प्रतिकूल माहौल को अनुकूल रूप देना खासा मुश्किल भी होता है और उसमें समय भी लगता है। निःसंदेह वित्त मंत्री का यह कहना सही है कि बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों में मंदी के हालात और साथ ही उनके बीच व्यापार को लेकर टकराव का असर भारत पर भी हो रहा है, लेकिन इस सबके बीच वांछित सुधारों को तेजी से आगे बढ़ाना भी जरूरी है। इससे ही यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि अर्थव्यवस्था की वैश्विक स्थिति का विपरीत असर कम से कम हो। ऐसा होने पर ही भारत सबसे तेज रफ्तार वाली अर्थव्यवस्था बने रह सकता है।

रणनीति पर रणनीति

लोकसभा चुनाव में बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद पार्टी प्रमुख ममता बनर्जी ने चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की मदद ली है। प्रशांत किशोर 2021 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को रोकने के लिए एक के बाद एक रणनीति बना रहे हैं और उस पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अमल भी कर रही हैं। प्रशांत किशोर की रणनीति के तहत लोगों तक पहुंच बनाने के लिए ममता ने 'दीदी के बोलो' अभियान शुरू किया है। इसके तहत एक मोबाइल नंबर और वेबसाइट जारी किया गया है जिस पर लोग अपनी शिकायत एवं सुझाव दर्ज करा रहे हैं। अब भाजपा भी ममता की उस रणनीति को तोड़ने के लिए एक नई रणनीति अपनाई है। प्रदेश भाजपा ने ममता के 'दीदी के बोलो' के जवाब में 'चा चक्रे दिलीप दा' अभियान शुरू किया है। 'चा चक्रे दिलीप दा' में किसी मोबाइल नंबर की मदद नहीं ली जाएगी। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष एवं सांसद दिलीप घोष निर्धारित समय पर निर्धारित स्थान पर जाएंगे और आम लोगों से सीधे बात करेंगे। इस बाबत भाजपा की ओर से गुरुवार को एक वीडियो एवं पोस्टर जारी किया है जिसकी शुरुआत में कमल फूल के साथ दिलीप घोष की तस्वीर है और वे हाथ में चाय का कप लेकर मुंह से लगाए हुए हैं और पास में लिखा 'चा चक्रे दिलीप दा'। 2014 लोकसभा चुनाव में भाजपा ने 'चाय पर चर्चा' अभियान चलाया था जो काफी प्रभावी रहा था और उस समय प्रशांत किशोर पीएम मोदी का चुनावी अभियान संभाल रहे थे। अब प्रशांत किशोर बंगाल में ममता के लिए रणनीति बना रहे हैं तो भाजपा ने उन्हीं का हथियार आजमाने का निर्णय लिया है। दिलीप ने बताया कि 'दीदी के बोलो' अभियान शुरू होने के बाद से भाजपा कार्यकर्ता भी मांग कर रहे थे कि भाजपा भी जनसंपर्क अभियान शुरू करे। घोष का कहना है कि मैं लगातार लोगों से मिलता हूं और लोग खुलकर बात करते हैं, लेकिन अब इस अभियान के तहत एक निर्धारित समय और स्थान तय कर दिया जाएगा और वहां पर वह आम लोगों के साथ विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करेंगे। परंतु ममता के अभियान एवं भाजपा के अभियान में बुनियादी अंतर है कि लोग राज्य के किसी भी हिस्से से ममता के साथ फोन पर जुड़ सकते हैं, लेकिन भाजपा के लिए यह संभव नहीं होगा। खैर, जो भी हो भाजपा की रणनीति ममता की रणनीति से कितनी बेहतर है यह तो वक्त ही बताएगा।

नए कश्मीर का उदय

कैप्टन आर विक्रम सिंह

अनुच्छेद 370 हटा तो अनिश्चितता का कोहरा पूरी तरह साफ होने के साथ ही मजहबी अलगाववाद का जरिया भी खत्म हो चुका है

कश्मीर कभी महान शासक ललितादित्य और कनिष्क के कारण भी जाना जाता था, लेकिन इसी कश्मीर में सिकंदर ने 1393 से 1413 तक इतने कत्ल किए कि घाटी धर्मांतरित होकर लगभग हिंदूविहीन हो गई थी। यह भी कभी कश्मीर का वर्तमान था। तलवार के घाट उतारे गए उन्हीं हिंदुओं के वंशज अभी कल तक निजामे मुस्तफा के नारे लगाते सुनाई देते थे। स्मृतिलोप का प्रभाव इतना भयंकर हो गया था कि वे अपने ही इतिहास के शत्रु हो गए थे। सूफियों का हिंदू परंपराओं से सामंजस्य इसलिए हुआ ताकि प्रताड़ित हिंदू समाज को धर्मांतरित कराने का रास्ता बनाया जा सके, लेकिन फिर असहाय हिंदू समाज पर तलवारों ने अपना काम किया। कहने का तात्पर्य यह कि कश्मीर का इतिहास कोई 1946 की अमृतसर संधि से प्रारंभ नहीं हुआ जब अंग्रेजों ने कश्मीर को महाराजा गुलाब सिंह को 75 लाख रुपये के राजस्व पर हस्तगत कर दिया था। उस संधि से कश्मीर और जम्मू एक राज्य के अधीन आए जिसमें फिर लद्दाख भी सम्मिलित हुआ। उसी समय से जम्मू और कश्मीर का स्वरूप सामने आया है। जो अब अतीत है वह वर्तमान से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

15 अगस्त को लाल किले के प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से उठाए गए इस प्रश्न का कोई जवाब विरोधी पक्ष के पास नहीं है कि जब आपका प्रचंड बहुमत था तो अनुच्छेद 370 को स्थायी क्यों नहीं कर दिया गया? अनुच्छेद 370 का हटाया जाना आजाद भारत के इतिहास की सबसे महान घटना है। 1971 की विजय को हम महानतम उपलब्धि मानते रहे, लेकिन वह विजय वार्ताओं की मेज पर अर्थहीन हो गई। संविधान का अनुच्छेद 370 जैसे हमारे भाग्य के साथ रफू कर दिया गया था। 5 अगस्त वह दिन है जब इतिहास ने करवट ली। इसके लिए यह देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ऋणी रहेगा। सदन में हुई चर्चाओं में आपत्तियां सामने आईं कि विपक्ष को विश्वास में लेकर निर्णय लिया जाना चाहिए था। आखिर अनुच्छेद 370 को संविधान में जोड़ते वक्त कौन सी बहस सुनी गई थी? बाबा साहब आंबेडकर ने तो साफ मना कर दिया था। सरदार पटेल ने भी कहा था कि नेहरू इस जिद के लिए पछताएंगे। दरअसल यह धार्मिक अलगाववाद को प्रश्रय देने वाला अनुच्छेद बनकर रह गया था। यह एक कैंसर था जिसे देश रूपी शरीर से निकाल फेंकना जरूरी था। यह अनुच्छेद कश्मीर में नेहरू की जनमतसंग्रह की घोषणा का परिणाम था जिसका निहितार्थ यह था कि कश्मीर का भविष्य अनिर्णीत और अनिश्चित है। इस विभाजित मानसिकता का प्रभाव शेष जम्मू-कश्मीर पर तो नहीं, लेकिन कश्मीर घाटी पर बहुत बुरा पड़ा। जब कश्मीर को विवादित मानकर पाकिस्तान से समझौता वार्ताएं चल रही हों तब आम कश्मीरी के लिए अपने को भारत का नागरिक न मानने का आधार मिल जाना स्वाभाविक था। आखिर जब कश्मीर का भविष्य तय करने की वार्ताएं हों तब कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, यह कहने का क्या अर्थ था? दुर्भाग्य से इस पर कभी विचार ही नहीं किया गया। अनुच्छेद 370 हटा तो अनिश्चितता का कोहरा भी पूरी तरह साफ हो गया है। अनुच्छेद 370 था तो मजहबी अलगाववाद था। अब आतंकवाद स्वयं लक्ष्यविहीन हो चुका है। अब वार्ताएं होंगी, पर गुलाम कश्मीर, गिलगित-बाल्टिस्तान की वापसी के लिए होंगी। इसी के साथ पाकिस्तान द्वारा चीन को हस्तगत की गई 5200 किमी की शख्शगम घाटी को लेकर भी वार्ताएं होंगी। वास्तव में अब यह अहसास हो रहा है कि 1971 की विजय के बाद इंदिरा गांधी और 1984 के प्रचंड बहुमत के बाद राजीव गांधी भी तो इस अनुच्छेद को हटा सकते थे।

हम इसकी अनदेखी नहीं कर सकते कि यह अनुच्छेद 370 ही था जिसके चलते कश्मीर की भारत से आजादी के पैरोकार मुखर होने लगे थे, लेकिन अब सब कुछ बदल गया है। चूंकि बदले हुए परिदृश्य में पाकिस्तान की ओर से कश्मीर घाटी को अशांत करने के हर संभव प्रयास हो सकते हैं इसलिए सतर्कता आवश्यक है। लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश बनाना प्रतीक्षित था। प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया है कि स्थिति सामान्य होने पर जम्मू-कश्मीर बतौर पूर्ण राज्य बहाल हो सकता है। यह वह मास्टरस्ट्रोक है जिसकी कल्पना किसी को नहीं थी। इससे कश्मीरी आतंकवाद का बुलबुला फूट गया है। मात्र चार जिलों श्रीनगर, कुलगाम, पुलवामा, अनंतनाग के प्रायोजित आतंकवाद से कश्मीर की मात्र 35 लाख आबादी और 7.5 प्रतिशत क्षेत्रफल ही प्रभावित है।

भविष्य में स्थिरता की दृष्टि से पश्चिम कश्मीर के जिलों कुपवाड़ा, उड़ी, पुंछ, राजौरी को मिलाकर 15 लाख की आाबादी के लिए लद्दाख की तरह केंद्र शासित प्रदेश बनाए जाने की आवश्यकता पड़ सकती है। यह क्षेत्र गुलाम कश्मीर की सीमा पर स्थित है। इसका मिजाज घाटी से अलग है और यह इलाका पाकिस्तानपरस्त नहीं है, बल्कि यह कश्मीर घाटी को उसके पाकिस्तानी संपर्कों से काटता है। इस इलाके में रहने वाले गुज्जर बकरवालों को केंद्र के सहारे की जरूरत पड़ सकती है। जब भी कभी जम्मू कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाए तो पश्चिमी कश्मीर सीमा क्षेत्र को केंद्र शासित बनाए रखना जरूरी होगा। यह परिवर्तन घाटी को सीमाओं से दूर कर जम्मू कश्मीर राज्य को मध्य में ले आएगा।

उम्मीद है कि प्रधानमंत्री मोदी की 'चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ' की घोषणा का निहितार्थ पूरी दुनिया के साथ पाकिस्तान ने भी समझा होगा। भारत अपनी सेनाओं को बड़ी भूमिका के लिए तैयार कर रहा है। जहां तक पाकिस्तान से हुए द्विपक्षीय समझौतों यथा शिमला समझौते और लाहौर घोषणा का प्रश्न है तो अब उनके निहितार्थ बदल जाएंगे। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर का जो मुद्दा अब तक अनुच्छेद 370 के पीछे छिपा हुआ था, अब मुख्य मुद्दा बनकर सामने आ चुका है। कश्मीर घाटी वार्ता की मेज से हट चुकी है। जाहिर है पाकिस्तान कश्मीर की बाजी हार चुका है। पाकिस्तान का रणनीतिक महत्व कम होने से कश्मीर को लेकर दुनिया के देशों और विशेषकर चीन की सोच भी बदलेगी। वे आठ लाख लोग जो 1947 में पाकिस्तान से बतौर शरणार्थी आए थे और बेचारगी के माहौल में बिना नागरिकता के गुजर-बसर कर रहे थे उनके जीवन में भी बड़ा बदलाव आने वाला है। चुनावी परिसीमन जम्मू को मुख्य भूमिका में ले आएगा। धार्मिक उन्माद के खात्मे के बाद कश्मीर के 14 लाख शियाओं की आवाज भी सुनी जाएगी। हमने कश्मीरी पंडितों के वे लावारिस घर देखे हैं जहां से उन्हें जान बचाकर भागना पड़ा था। कश्मीर यात्रा के दौरान शियाओं के एक गांव में लोगों ने एक उजड़ी हुई बस्ती दिखाई थी। वहां के सात मकानों को गांव वालों ने अपने पंडित भाइयों की वापसी की उम्मीद में सुरक्षित रखा हुआ था। उम्मीद है कि ये घर भी अब आबाद होंगे।

(लेखक पूर्व सैनिक एवं पूर्व प्रशासक हैं)

response@jagran.com

अवधेश राजपूत

जीवन की सीख देने वाले कृष्ण

परिचय दास

कृष्ण इसलिए भारतीय जीवन में रचे-बसे हैं, क्योंकि उन्होंने मानुष-धर्म को सरल-सुगम रूप में समझाया

कृष्ण में हमें उनका बहुआयामी व्यक्तित्व दिखाई देता है। वे परम योद्धा थे, लेकिन अपनी वीरता का प्रयोग साधुओं के परित्राण (रक्षा) के लिए करते थे। वे एक श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ थे, लेकिन उन्होंने इस राजनीतिक कुशलता का प्रयोग जन-कल्याण के लिए किया। वे परम ज्ञानी थे। उन्होंने अपने ज्ञान का उपयोग लोगों को मनुष्यता के सरल और सुगम रूप को सिखाने में किया। उनमें प्रेम एवं ज्ञान का अद्भुत समन्वय था। प्राचीन और आधुनिक साहित्य का एक बड़ा भाग कृष्ण की मनोमय एवं प्रेममय लीलाओं से ओत-प्रोत है। उनके लोकरंजक रूप ने भारतीय जनता के मानस-पटल पर जो छाप छोड़ी है वह अमिट है।

कृष्ण सिखाते हैं कि प्यार कैसे किया जाता है। जिन प्रेमियों में एक-दूसरे के प्रति आदर और सम्मान नहीं, जिनमें एक-दूसरे का ख्याल रखने की भावना नहीं, उनमें प्यार कैसे हो सकता है? युद्ध और प्रेम में अंतर यह है कि युद्ध में आप मिटाकर जीतते हैं, जबकि प्रेम में आप मिटकर जीतते हैं। कृष्ण के जीवन पर ध्यान दें तो पाएंगे कि वे सबको सुख देना चाहते थे, सबके साथ रहना चाहते थे और सबका ख्याल रखना जानते थे। अपनी लीलाओं में उन्होंने यही सब दर्शाया है। वे संगीत में रमने वाले, बांसुरी से सबका हृदय जीतने वाले थे। कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र भी था जिसे वे प्रतिरोध के साधन के रूप में प्रयोग करते थे। वे योग के ज्ञाता थे। उन्होंने मानुष-धर्म को समझाया। कृष्ण भारतीय जन-मन के प्राण हैं।

कृष्ण कहते हैं कि अगर आप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं तो अपनी रणनीति बदलिए, न कि लक्ष्य। वह कहते हैं कि क्रोध से भ्रम पैदा होता है। भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है। जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है और जब तर्क नष्ट होता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है। जो व्यवहार आपको दूसरों से पसंद न हो, वैसा व्यवहार आप दूसरों के साथ भी न करें। ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान और कर्म को एक रूप में देखता है, वही सही मायने में देखता है। आसक्ति से कामना का जन्म होता है। जो मन को नियंत्रित नहीं करते, उनके लिए वह शत्रु के समान कार्य करता है। कार्य में कुशलता को योग कहते हैं। कृष्ण ने गीता में कहा है कि स्थितप्रज्ञ हो जाना ही धर्म है। आत्मा को न तो किसी शस्त्र से काटा जा सकता है और न ही जलाया जा सकता है, क्योंकि आत्मा तो अमर है।

कृष्ण हमें यह भी सिखाते हैं कि मुसीबत के समय या सफलता न मिलने पर हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। इसके बजाय हार की वजहों को जानकर आगे बढ़ना चाहिए। समस्याओं का सामना करें। एक बार डर को पार कर लिया तो फिर जीत आपके कदमों में होगी। उन्होंने लोगों का व्यर्थ चिंता न करने और भविष्य के बजाय वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करने का मंत्र दिया। कृष्ण बताते हैं कि इंसान को दूरदर्शी होना चाहिए और उसे परिस्थिति का आकलन करना आना चाहिए। जब किसी व्यक्ति को अपने बल पर विश्वास नहीं रहता तभी जीवन में आने वाले संघर्षों का सामना करने के लिए वह स्वयं को योग्य नहीं मानता! ऐसी स्थिति में वह अच्छे गुणों को त्याग कर दुर्गुणों को अपनाता है! अर्थात मनुष्य के जीवन में दुर्गुणता जन्म ही तब लेती है जब उसके जीवन में आत्मविश्वास नहीं होता।

कृष्ण समझाते हैं कि संघर्ष और चुनौतियां जीवन के लिए लाभकारी होती हैं। प्रत्येक नया प्रश्न प्रत्येक नए उत्तर का द्वार खोलता है। कृष्ण को दो रूपों में प्रमुखतः देखा जाता है-बाल कृष्ण और योगेश्वर कृष्ण। ज्ञानी कृष्ण की इस रूप में पहचान करता है कि उसकी आत्म-जागृति कृष्ण की जागृति के समान होती है। व्यक्ति संकल्प करे तो उसकी चेतना भी कृष्ण के समान विकसित हो सकती है। महाभारत के युद्ध में कृष्ण ने अर्जुन से कहा, 'मैं इस शरीर से भिन्न हूं। मैं शुद्ध आत्मा हूं। तू भी शुद्ध आत्मा है। तेरे तात, भाई, गुरु और मित्र जिनसे तू यह युद्ध करनेवाला है, वे भी शुद्ध आत्मा हैं। युद्ध करना तेरे लिए निश्चित कर्म फल है, इसलिए तुम्हें यह कार्य आत्मा की जागृति में रहकर करना है। इस जागृति में रहकर अगर तुम लड़ाई करते हो तो तुम नए कर्म में नहीं बंधोगे और पुराने कर्म खत्म कर पाओगे, जिससे तुम्हारा मोक्ष होगा।'

कृष्ण एक तरफ यमुना के मीठे पानी से आरंभ करते हैं और समुद्र के विस्तार तक पहुंचते हैं। एक अंगुली के सुदर्शन चक्र तक आने के पहले दस अंगुली वाली बांसुरी से हृदय जीतते हैं। चूंकि कृष्ण में हर रंग मिलते हैं इसलिए वे पूर्ण पुरुष हैं और जनमानस में रचे-बसे हैं।

(लेखक साहित्यकार हैं)

response@jagran.com

ऊर्जा

मन और वर्तमान

इस जगत में मन से बढ़कर चलायमान कुछ भी नहीं है। इस पल यहां, अगले ही पल वहां। किसी पेंडुलम की भांति डोलता रहता है हमारा मन। भूत और भविष्य के दरमियान। बिना रुके। लगातार। लेकिन जीवन कहां है? यहां। अभी। इसी क्षण में। वर्तमान में। मगर चंचल मन है कि रुकने का नाम ही नहीं लेता। नतीजा ये कि हम लगातार चूकते जाते हैं 'इस' क्षण से। वर्तमान क्षण से। या यूं कहें कि जीवन से।

हम सब के अनुभव में यह बात तो अवश्य आई होगी कि मन के भूतकाल में विचरण करने से मुख्यतः क्रोध एवं पश्चाताप की भावनाएं पनपती हैं। और यही मन जब कभी किसी चंचल हिरण की मानिंद भविष्य रूपी जंगल में कुलांचे भरता है तो डर एवं चिंता रूपी शक्तिशाली शत्रु इसे तत्काल ही घेर लेते हैं। भूत और भविष्य के बीच डांवाडोल मन के लिए स्वतः ही 'आगे कुआं, पीछे खाई' वाली स्थिति निर्मित हो जाती है। मन की इस निरंतर मैराथन दौड़ से हमें कुल मिलाकर क्या मिलता है? क्रोध, पश्चाताप, डर, चिंता जैसी चंद नकारात्मक भावनाएं। ऐसी भावनाएं, जो कि पल भर में ही हमारी सारी प्राण-ऊर्जा सोख लेती हैं और नतीजतन जीवन की आनंद-सरिता देखते ही देखते सूख जाती है।

मन को वर्तमान में लाया कैसे जाए? दरअसल मन को मन के स्तर से नियंत्रित करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है। ऐसे में काम आती है तो हमारी अपनी ही श्वास, जो कि हमेशा से हमारे साथ है, मगर हमने इसे कभी तवज्जो ही नहीं दी। मन रूपी पतंग को काबू में रखने वाली डोरी का नाम है श्वास। और श्वास हमेशा वर्तमान में ही चलती है, न कि भूतकाल अथवा भविष्य में। मन की आंखों से श्वास की गति को देखें। अंदर आती सांस, बाहर जाती सांस। देखते जाएं। बस देखते ही जाएं। थोड़े ही समय में विचारों का प्रवाह तुरंत प्रभाव से रुक जाएगा। और जैसे ही विचारों की गति को विराम मिलेगा, भूत एवं भविष्य अपना अस्तित्व खो देंगे। और बचेगा तो सिर्फ वर्तमान क्षण। सभी नकारात्मक भावनाओं से मुक्त। आनंद से भरपूर।

कुमार विनोद

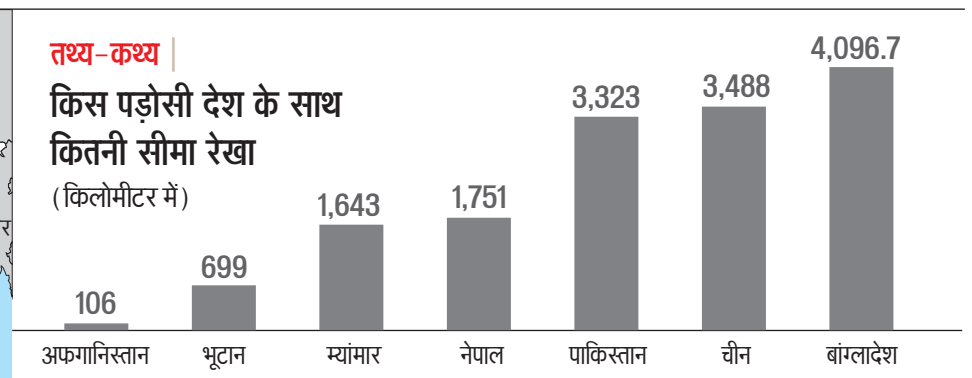

जंगल की आग से कमजोर होते पहाड़

अमृत कुमार

वनों की सुरक्षा पर तत्काल ध्यान देना जरूरी है तभी जैव विविधता, पहाड़ और पर्यावरण सुरक्षित रह सकते हैं

भूस्खलन की खबरें इन दिनों आए दिन अखबारों की सुर्खियां बन रही हैं। देखा जाए तो भूस्खलन एक ऐसी आपदा है जिसका सामना कमोबेश हर मौसम में करना पड़ता है। इससे मिनटों में सैकड़ों जिंदगियां तबाह हो जाती हैं, गांव बह जाते हैं, मकान ध्वस्त हो जाते हैं। भूस्खलन से रास्ते अवरुद्ध हो जाते हैं। नतीजतन यातायात तो प्रभावित होता ही है, जन-धन की भी हानि होती है, शिक्षण संस्थानों को बंद करना पड़ता है और दैनिक वस्तुओं खासकर खाने-पीने की वस्तुओं की आपूर्ति भी अत्याधिक रूप से प्रभावित होती है। यह स्थित कभी-कभी तो हफ्ते दो हफ्ते तक रहती है। वह बात दीगर है कि राहत और बचाव दल के जवान दुर्गम पर्वतीय स्थानों पर सहायता पहुंचाने के लिए त्वरित कार्रवाई कर अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहते हैं।

आखिर इस भूस्खलन की वजह क्या है? भूस्खलन की घटनाएं अक्सर पहाड़ी इलाकों में ज्यादा देखने में आती हैं। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण है जंगलों में लगने वाली आग की घटनाएं, वह चाहे प्रकृति प्रदत्त कारणों से लगी हों या फिर मानवीय दखलंदाजी के कारण। गर्मियों के मौसम में पहाड़ी क्षेत्रों में लगने वाली आग से वनस्पति, जैवविविधता और पर्यावरण को तो बड़े पैमाने पर नुकसान होता ही है, बारिश के मौसम में भूस्खलन का भी वह अहम कारण बनती है। शोध के अनुसार पेड़ों की जड़ें जमीन पर अपनी पकड़ बनाए रखती हैं। जब पहाड़ के जंगल में आग लगती है तो वहां हरियाली खत्म हो जाती है। पेड़-पौधे सूख जाते हैं। नतीजतन पेड़-पौधों की जड़ें कमजोर पड़ जाती हैं। बारिश के बाद धूप निकलने पर पहाड़ फटने लगता है। उस स्थिति में भूस्खलन होता है जो भारी तबाही का कारण बनता है। इसके अलावा पानी का रिसाव भी भूस्खलन एक अहम कारण है। पहाड़ों पर पानी के स्रोत इसमें अहम भूमिका निभाते हैं। जहां-जहां पत्थरों के ढेर पर पहाड़ियां टिकी हैं, वहां जरा सी हलचल भूस्खलन का कारण बनती है। छोटी-छोटी पहाड़ियां ही नहीं, बड़ी-बड़ी पहाड़ियां भी खिसक जाती हैं। भूस्खलन की घटनाएं बारिश में ही नहीं, गर्मियों और सर्दियों में भी होती हैं। कभी-कभी ये घटनाएं बड़ी आपदा का रूप धारण कर लेती हैं। इसके प्रमाण हैं कि यदि पहाड़ों पर हरियाली बरकरार रहे तो पहाड़ कभी ना गिरें। पर्यावरण की अनदेखी कर विकास के लिए पहाड़ों से हम जिस कदर निर्दयतापूर्वक पेड़ों का खात्मा कर रहे हैं, पहाड़ों को हरियाली से महरूम कर रहे हैं, भूस्खलन उसका ज्वलंत प्रमाण है।

विडंबना है कि इस खतरे को सरकार और जनता, दोनों समझ नहीं रहे हैं। यह जानते-समझते हुए कि जंगल की यह आग ही भूस्खलन का प्रमुख कारण है। हमारे पर्यावरण मंत्री भी यह स्वीकार कर चुके हैं कि जनता पर्यावरण विनाश के खतरों के प्रति जागरूक नहीं है। विचारणीय यह है कि इसके लिए जिम्मेदार कौन है? इस ओर तत्काल ध्यान देना जरूरी है तभी जैव विविधता, वनस्पति और पर्यावरण सुरक्षित रह सकते हैं।

(लेखक रांची केंद्रीय विवि में सहायक प्रोफेसर हैं)

मेलबाक्स

मोदी सरकार की चुनौतियां

मजबूत इच्छाशक्ति से बदलाव लाते मोदी शीर्षक से लिखे अपने लेख में गृह मंत्री अमित शाह ने नरेंद्र मोदी को मजबूत इच्छाशक्ति एवं कठिन फैसले लेने वाले पीएम के रूप में जमकर वकालत की है जो काफी हद तक सही भी है, क्योंकि पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के बाद सबसे कठिन फैसले लेने वाले पीएम नरेंद्र मोदी ही हैं। उनके नेतृत्व में ही अनुच्छेद 370, 35-ए, नोटबंदी, जीएसटी और सर्जिकल स्ट्राइक जैसे महत्वपूर्ण फैसले लिए गए हैं, लेकिन अगर हम समग्र रूप से देखें तो वर्तमान केंद्र सरकार समक्ष कुछ चुनौतियां भी हैं जिनको नकारा नहीं जा सकता है। जैसे देश में बेरोजगारी पिछले 45 साल के इतिहास में चरम पर है। इन दिनों अर्थव्यवस्था में मंदी की आहट सुनाई दे रही है। प्रमुख बड़ी कंपनियों ने बड़े पैमाने पर अपने कर्मचारियों की छंटनी शुरू कर दी है। विदेशी निवेश पर्याप्त मात्रा में नहीं आ रहा है। नोटबंदी के भी अपेक्षित फायदे नजर नहीं आ रहे हैं। कुल मिलाकर देखें तो मोदी सरकार ने कई क्षेत्रों में सफलता हासिल की है, पर कुछ क्षेत्रों में अभी इसे खुद को साबित करना बाकी है। अर्थव्यवस्था पर छाए संकट को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। अच्छा होता अमित शाह जी अपने लेख में इस बात का भी थोड़ा जिक्र करते।

सुनील कुमार यादव, बलिया, उप्र

ट्रंप की व्यापार नीति

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में विश्व व्यापार संगठन से अमेरिका को बाहर निकालने की धमकी दी है। उनके अनुसार डब्ल्यूटीओ जिस प्रकार से अमेरिका के साथ व्यवहार कर रहा है, वह अनुचित है। इसके साथ ही अमेरिकी राष्ट्रपति ने डब्ल्यूटीओ के उन नियमों की भी आलोचना की जिनके आधार पर भारत और चीन अभी भी विकासशील देशों की सूची में शामिल हैं। हालांकि डब्ल्यूटीओ के नियमों के अनुसार किस राष्ट्र को विकासशील देश की सूची में रखना है इसका निर्धारण उस राष्ट्र के प्रति व्यक्ति आय के आधार पर होता है। क्योंकि भारत और चीन की जनसंख्या काफी ज्यादा है, जिससे राष्ट्रीय आय के बढ़ने पर भी प्रति व्यक्ति आय अपेक्षाकृत कम ही बनी रहती है। इसलिए भारत की तुलना अमेरिका से करना उचित नहीं होगा। अमेरिका चाहता है कि जिस प्रकार से विकासशील देश अन्य देशों के उत्पादों पर आयात और सीमा शुल्क को बढ़ाकर अपने घरेलू उत्पादों को संरक्षण देते हैं, उसी तरह से अमेरिका भी अन्य देशों के उत्पादों से अपने घरेलू निर्माताओं को संरक्षण दे सके। डोनाल्ड ट्रंप सत्ता में आने के बाद से ही अमेरिका प्रथम की नीति पर आगे बढ़ रहे हैं। अमेरिका चाहता है कि उसके उत्पाद विश्व के सभी बाजारों में बिना टैरिफ बाधाओं के पहुंच सकें, लेकिन अन्य देशों के उत्पादों को अमेरिका अपने घरेलू आवश्यकता अनुसार प्रवेश दे। अमेरिका यदि डब्ल्यूटीओ से बाहर होता है तो डब्ल्यूटीओ की प्रासंगिकता पर भी सवाल उठने लगेंगे। इस स्थिति में नुकसान गरीब देशों और विकासशील देशों का ही होने वाला है, क्योंकि जो संरक्षण उन्हें डब्ल्यूटीओ के अंतर्गत मिलता है, वह बंद हो जाएगा।

kulindaryadav5412@gmail.com

मंदिर और मूर्ति

अभी दिल्ली में रविदास मंदिर को लेकर हुए विवाद से आम जनता को खासी परेशानी हुई। इसी तरह दिल्ली विवि में भी डूसू नेताओं ने बिना अनुमति के ही मूर्ति लगा दी, जिस पर विवाद चल रहा है। मंदिर और मूर्ति निश्चित ही आस्था और विश्वास के प्रतीक हैं, मगर इनकी पवित्रता को कायम रखने के लिए इन्हें उचित स्थान पर ही सर्व सहमति से स्थापित करना उचित है। आज कुछ लोग धर्म के नाम पर सरकारी जमीन पर कब्जा जमा लेते हैं। यह प्रशासन की कमजोरी है।

वेद मामूरपुर, नरेला

चिदंबरम की गिरफ्तारी

अच्छा होता पी. चिदंबरम जमानत याचिका खारिज होने के बाद वे स्वयं सीबीआइ के समक्ष प्रस्तुत हो जाते। इससे उनकी गरिमा भी बनी रहती तथा न्याय क्षेत्र में भी अच्छा संदेश जाता। क्योंकि वे पूर्व मंत्री होने के साथ-साथ वरिष्ठ अधिवक्ता भी हैं। यदि वे ही न्याय व्यवस्था में विश्वास नहीं दिखाएंगे तो आम आदमी पर क्या प्रभाव पड़ेगा। किंतु उन्होंने इसके शक्ति प्रदर्शन का प्रयास किया। सीबीआइ को मजबूरन उन्हें गिरफ्तार करना पड़ा। आशा है कि न्यायालय में जल्द ही दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा।

विनोद चतुर्वेदी, दिल्ली

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

अपने पत्र इस पते पर भेजें :
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल : mailbox@jagran.com

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त. पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन. संपादकीय निदेशक-महेन्द्र मोहन गुप्त. प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग,रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समा